		Time allotted
13.	The Industries (Development and Regulation) Amendment Bill, 1962.	1 hour
14.	Consideration of motion for modification of the Conduct of Elections (Second Amendment) Rules, 1962.	1 hour

The Committee has also recommended that in order to be able to complete the business, the House may curtail or dispense with the lunch hour and sit beyond 5 P.M. as and when necessary.

SHRI ABID ALI (Maharashtra): What happened to the Provident Fund Act (Amendment) Bill?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): It was not before the Business Advisory Committee.

THE PREVENTION OF HYDROGENATION OF OILS BILL, 1962—*continued*

श्री कृष्ण चन्द्र : माननीय उपसभाध्यक्षजी इसमें कोई दो रायें नहीं हैं कि जो जमा हुआ तेल है, जिसको वनस्पति कहते हैं, वह घी की अपेक्षा कम पुष्टिकारक है । जमाने की क्रिया से तेल के अन्दर कोई ऐसा गुण नहीं आता है जिससे वह तेल की अपेक्षा ज्यादा पुष्टिकारक हो या ज्यादा गुणकारी हो । लेकिन जमा हुआ तेल अर्थात् वनस्पति जमाने के कारण हानिकारक हो जाता है यह किसी ने भी अपने भाषण में नही बताया है । वाजपेयीजी ने भी इस बात को नहीं कहा है कि जमाने की क्रिया से तेल हानिकारक हो जाता है या उसमें कोई ऐसे खराब तत्व आ जाते हैं जिससे कि स्वास्थ्य के लिए वह हानिकारक हो जाता है । उन्होंने यही कहा है कि जमाने से उसमें कोई विशेष पुष्टिकारक गुण नहीं आता है । घी की अपेक्षा वह पुष्टिकारक नहीं है [इसमें कोई दो रायें नहीं हैं लेकिन जमाने की क्रिया से उस में कोई हानिकारक तत्व नहीं आता है ।

दूसरी यह बात कही गई है कि जमे हुए तेल अर्थात् वनस्पति के प्रचार से जो असली घी है उसका उत्पादन घट रहा है । यह किस तरह से है ? मेरे खयाल में, उसके कारण असली घी का उत्पादन घट जाय यह तो कोई मानने की बात नहीं है क्योंकि असली घी की आज भी बडी मांग है । आज आप देखते हैं कि पार्लियामेंट हाउस में जो असली घी मिलता है उसके लिए—जैसा कि अभी मेरे पहले कुछ वक्ताओं ने भी बताया—इतनी मांग है कि हर एक पार्लियामेंट मेम्बर से कोई न कोई आदमी रोज ब रोज स्लिप लिखाने के लिए तैयार रहता है कि उसको असली घी मिल जाय । चाहे वह कितना ही महंगा हो लेकिन आज उसकी मांग है । जब वनस्पति नहीं था तब भी असली घी बाजार में बहुत कम मुयस्सर होता था । यह जो बताया गया है कि वनस्पति के कारण घी में मिलावट आसान हो गई है, यह सही है कि वनस्पति के कारण घी में जो मिलावट होती है उससे वनस्पति की कोई दुर्गन्ध नहीं आती है और कोई उसे आसानी से, जल्दी से पहचान नहीं सकता है, लेकिन उससे पहले भी घी में मिलावट होती थी । उसके आने से पहले घी में मिलावट नहीं थी यह कोई नहीं मान सकता है । जब वनस्पति नही था—१९१४-१८ की जब लड़ाई हुई थी तब वनस्पति घी का कोई नामोनिशान नही था—लेकिन चूकि फौजों में घी की सप्लाई होने की बदौलत घी का दाम ज्यादा हो गया था तो घी में मिलाने के लिए तरह तरह की चीजें सामने आ गई थीं और नये नये कारखाने इसके लिये हमारे इस देश में खुल गये थे । सांप की चरबी, सूअर की चरबी, ऐसी कितनी ही चरबिया जो घी की तरह की होती थी वह मिलाई जाती थीं वह मिला हुआ घी बाजार में बेचा

[श्री कृष्ण चन्द्र]

जाता था । उनके मिलाने से घी हानिकारक हो जाता था, उसमें दुर्गन्ध आने लगती थी । यह बिल्कुल नहीं बात है कि वनस्पति के होने के बाद से मिलावट आसान हो गई है क्योंकि पहचान नहीं हो सकती है और उसमें दुर्गन्ध नहीं आती है, उससे बदजायका नहीं होता है, जायका नहीं बिगड़ता है, स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता है और जब उसका बना हुआ पकवान वगैरह खाते हैं तो वह कोई नुक़सान नहीं करता है जैसा कि पुराने जमाने में चरबी से होता था कि उसको खाने के बाद रात में क़य हो जाती थी या रात को बदहजमी हो जाती थी । आज वनस्पति घी में वैसी कोई चीज़ नहीं होती है इसलिये उसका पहचानना आसान काम नहीं है । इसके लिए ज़रूर कोई तदबीर होनी चाहिए कि उसको आसानी से मिला न जा सके । उसके लिये सब मानते हैं, गवर्नमेंट भी इस बात को स्वीकार करती है कि वनस्पति घी में कोई ऐसा रंग दिया जाय, उसमें कोई ऐसी चीज़ मिलाई जाय जब वनस्पति को घी के साथ एडल्ट्रेट किया जाय, मिला कर उसे बेचा जाय, तो फ़ौरन उसकी पहचान आसानी से हो सके कि इस में वनस्पति मिला हुआ है । अगर वह रंग दे दिया जाता है जो लोग आज असली घी खाना चाहते हैं वह उसको खा सकेंगे । आज दिक्कत यह हो रही है कि जो लोग असली घी खाना चाहते हैं वह जब बाज़ार से घी लाते हैं तो उन्हें असली घी की जगह पर वनस्पति मिलता है । ऐसी हालत में वे यह सोचने लगते हैं कि जब ज्यादा पैसा दे कर भी वनस्पति ही खाना है तो क्यों नहीं यों ही वनस्पति खाऊं । इस वजह से घी ज्यादातर लोग वनस्पति खाते हैं । यह सब मानते हैं, इस में कोई दो मत नहीं हैं कि वनस्पति में कोई रंग दे दिया जाय, हर एक आदमी यह चाहता है कि वनस्पति के ऊपर कोई ऐसी क्रिया होनी चाहिए कि जिस से वनस्पति आसानी से घी में न मिलाया जा सके और घी में मिला कर आसानी से बाज़ार में चल न सके । हर आदमी यह पहचान ले कि इस में मिलावट है । अगर ऐसा हो जाय तो फिर कोई शिकायत नहीं रहती है । जैसा कि मुझे मालूम है, आज सब मिलों के लिये यह लाजमी है, उनके लिय यह अनिवार्य है, कि जब वह बनस्पति बनाते हैं तो उस में कुछ तिल का तेल मिलाना पडता है और तिल का तेल इस वास्ते मिलाना पड़ता है कि तिल का तेल मिलने से आसानी से हाइड्रोक्लोरिक एसिड डाल कर घी की परीक्षा की जा सकती है । अगर हाइड्रोक्लोरिक एसिड और एक कोई दूसरी चीज उसमें डालें तो उस का रंग गुलाबी हो जायेगा । यह शायद इसी वजह से हुआ है कि अभी तक कोई रंग मालूम नही हो सका है । बहुत से माननीय सदस्यों ने यह भी कहा कि इतने दिनों के बाद भी सरकार किसी ऐसे रंग को निकालने में असमर्थ रही है जो कि बनस्पति में दिया जा सके और जिस को फिर कोई डिक्लराइज न कर सके, यह वाकई बहुत अफसोस की बात है । सरकार को इस तरफ बहुत ज्यादा तवज्जह देनी चाहिय और अगर पूरी कोशिश की जाय तो हम लोगों का यह ख्याल है, यकीन है, कि ऐसा रंग निकल आयेगा । लेकिन इसकी शिकायत जो करते हैं उनको किसी ने रोका नही है । मैं पूछता हूं, अगर वाकई जैसा कि कुछ माननीय सदस्यों ने सरकार के ऊपर यह इल्जाम लगाया—मैला फाइडे का, बदनीयती का—कि सरकार जान बूझ कर कोई ऐसा रंग नहीं निकाल रही है कि पूजीपति जो बनस्पति के काम में लगे हुए हैं उनकी तरफदारी करते हुए, उनका मुनाफा न घटे इस ख्याल से सरकार कोई रंग नहीं निकाल रही है । मैं समझता हूं, उन का यह कहना नामुनासिब है, क्योंकि अगर सरकार नहीं निकालती तो क्या किसी के ऊपर बाहर रोक है ? बाहर भी बहुत सी लेबोरेटरीज हैं, अनुसन्धान शालायें हैं, कालेजों में बडे बडे प्रोफैसर्स हैं,

विद्वान लोग हैं, अगर सरकार रंग नही निकाल पाती तो कोई तो माई का लाल ऐसा हिन्दुस्तान में हो जो उसको ढूढ निकाले, जो यह कह दे कि यह रग मैने निकाला है. यह रग आसानी से वनस्पति में मिलाया जा सकता है ।

श्री ए० बी० वाजपेयी क्या माननीय सदस्य को यह पता है कि कलकत्ता गाधी प्रतिष्ठान के श्री सतीश चन्द्र ने रतनजोत एक रग निकाला है, पर उसको सरकार ने मजूर नही किया है ।

श्री कृष्ण चन्द्र जी हा, रतनजोत का रग निकाला है और यह बात सबके सामने आई है। लेकिन वनस्पति तेल मे जब रतनजोत का रग दिया गया तो एक दूसरे साहब ने उसको डिकलराइज करके दिखा दिया । रग ऐसा होना चाहिये कि अगर उसको वनस्पति मे एडल्ट-रेशन करने के लिये कोई इस्तेमाल करे तो बाद में कोई उसको डिकलराइज न कर सके। रतनजोत एक वनस्पति है, एक जडी है, जिसके रग को आसानी से डिकलराइज किया जा सकता है। इस वास्ते यह रग कामयाब नही हुआ है और इसको अपनाया नही जा सका ।

दूसरी बात वाजपेयीजी ने यह कही है कि इस वनस्पति के कारण जो घरेलू धधे थे, तेल बनाने के जो कि गाव गाव मे फैले थ और जिनसे अच्छा ताजा तेल गाव वालों को मिल जाता था उस धधे का इस वनस्पति की बदौलत ह्रास हो रहा है । यह एक तरह से कन्फ्यूज़न है, उलझन है, उनके दिमाग में । यह बात तो हर एक दस्तकारी के बारे में, हर एक धधे के बारे में कही जा सकती है । आज अगर तेल की घानी का धधा नष्ट हो रहा है तो यह महज वनस्पति के कारण नही हो रहा है बल्कि बडी बडी जो तेल की मिले है, जो सरसो का तेल पैदा करती हैं, तिल का तेल बनाती है, जिसके लिये बड़े बड़े कारखाने है—उनकी वजह से आज यह धधा पट हो रहा है । वह इन्ही बडे बड़े कारखानेदारों की वजह से हो रहा है । यह सिर्फ इसी धधे में नही है, सारे घरेलू धधों का यह हाल है कि बड़े बड़े कारखानों के मुकाबले में व ठहर नही पाते हैं और इसलिये बद होते जा रहे है। तो इस वनस्पति की ही बदौलत तेल का धधा बन्द नही हो सकता । जो लोग तेल खाते है उनको तेल मिल जाना चाहिये, लेकिन आज परेशानी यह है कि अगर कोई आदमी तेल खाना चाहते हैं तो उनको शुद्ध तेल भी मुयस्सर नही है, जैसे मै सरसों का तेल खाना चाहता हूं, बहुत से बगाली लोग हैं, गुजराती लोग हैं जो तेल खाना पसन्द करते है लेकिन आज तो तेल भी असली मुयस्सर नही है । हम लोग गाधी आश्रम से तेल मगाते हैं जो तीन रुपये सेर मिलता है । अगर असली तेल मुयस्सर हो जाये तो किसी को रोक नही है, जो चाहे, तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं । आज जो वनस्पति का इस्तेमाल करते है, इसके बारे मे मै अपने अनुभव से बताता हू, व इस वजह से करते है कि उनको असली तेल मिलता नही । हर जगह गाधी आश्रम नही है जहा से लोग असली तेल ले सके । वनस्पति तेल आसानी से मिल जाता है, बनस्पति के ऊपर हरेक को इत्मीनान है कि वह शुद्ध है, उसमें कोई क्रिया ऐसी नही हुई है कि जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है । इस वास्ते वे तेल को ग्राह्य न करके बनस्पति को खरीद लेते है ।

तेल के बारे में जैसा कि हमारे माननीय सदस्य वाजपेयी जी ने बताया, हमारे पुराने स्वास्थ्य मत्री ने इस बात को माना था कि तेल ज्यादा गुणकारी है बनिस्बत वनस्पति के । यह सही बात है। असली तेल ज्यादा गुणकारी है, अगर सरसों का तेल खाया जाये तो वनस्पति के तेल से गुणकारी है । लकिन लोग क्यों नही खाते हैं तेल को ? माननीय उपसभाध्यक्ष जी, इसमे बहुत सी बाते है । हर चीज़ हर आदमी ग्रहण नही करता है ।

[श्री कृष्ण चन्द्र]

आदमी अक्सर वह चीज़ ग्रहण करता है जो स्वादिष्ट भी हो, देखने में भी अच्छी लगती हो। कोई ऐसी खाने की चीज़ मुझे दे दी कि जिसकी शक्ल देखते ही मुझे नफरत हो जाये तो मैं उस चीज को ग्रहण नहीं करूंगा। आज वनस्पति इस शक्ल में बनाया जा रहा है कि वह ग्राह्य है हर आदमी को। आज बहुत से लोग जो नाज़ुक मिज़ाज हैं, वे अगर तेल खा लें तो उन के गले में खराश आ जाती है क्योंकि तेल में फ्री एसिड होता है और फ्री एसिड गले में खराश कर देता है। यनस्पति को बनाने में जो क्रिया होती है उस में वह फ्री एसिड निकाल देते हैं और उसकी बदौलत वनस्पति को खाने से किसी नाज़ुक मिज़ाज के गले में भी खराश नहीं होगी और वह देखने में अच्छा घी जैसा है, खाने में स्वादिष्ट है, उससे कोई गले में भी खराश नहीं होती, इस वास्ते लोग उसे खाते हैं, ज्यादातर। वनस्पति में भी कोई डालडा के नाम से है, कोई दूसरे नाम से है।

श्री शीलभद्र याजी : नाज़ुक मिज़ाज से क्या मतलब है ?

श्री कृष्ण चन्द्र : नाज़ुक मिज़ाज से मतलब डेलीकेट है, जो ज़रा सी सर्द चीज़ खा ले तो जुकाम हो जाये, चिकनाई खा ले तो उसके गले मे खराश कर दे। तो इस तरह से घी की जगह जो वनस्पति ने ली है, वह जैसा कि वाजपेयी जी ने कहा, हमारे देश में ही नहीं ली है सारी दुनिया मे सारे संसार में बनस्पति फैल गया है, चाहे उसे मारगेरीन कहो चाहे और कुछ कहो। सब जगह वह प्रचलित हो गया है। जो समझदार लोग हैं वे उसका इस्तेमाल लिमिटेड रूप में करते हैं, जैसे कि बाहर की कन्ट्रीज में होता है। वे पकवान बनाने में उसका इस्तेमाल करते हैं, पकौड़ी, पूरी, कटलेट्स वगैरह ऐसी चीज़ें हैं जो वे मारगेरीन में बनायेंगे। जहां तक मुझे ख़याल है, किसी किसी मुल्क में इस तरह का कानून है, कि इन चीज़ों के बनाने के लिये पकवान बनाने के लिए पूरी, कटलेट्स, पकौड़ी, इन चीज़ों के बनाने में असली घी का इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं, ऐसा करना वर्जित है, क्योंकि असली घी हर जगह लिमिटेड क्वाण्टिटी में है वह इतना नहीं है कि हर आदमी जितना चाहे उतना मिल जाये। दुनिया भर में असली घी कम है और उस का इस्तेमाल लिमिटेड काम के लिये रखा है।

श्री जयनारायण व्यास : पकौड़ी तो असली तेल में ही बनती हैं।

श्री कृष्ण चन्द्र : उपसभाध्यक्ष जी, यह बात सही है जैसा कि व्यास जी ने स्वयं कहा। आजकल आम लोगों का खयाल यह है, बल्कि कहना चाहिये सब लोगों की यह साइकलोजी है, कि हां साहब, असली घी की जलेबी अच्छी लगती है, असली घी का हलवा अच्छा लगता है, असली घी की पूरी अच्छी लगती है। मैं अपना अनुभव बताऊं कि असली घी की पूरी हो या नकली घी, वनस्पति, की हो, मैं व्यास जी को दावत दूं और नकली घी को असली बता कर उनके सामने पूरियां रखूं तो अगर उनके ऊपर यह असर होगा कि मेरे यहां वनस्पति इस्तेमाल नहीं होता है तो मेरा निश्चय मत है कि वाजपेयी जी या व्यास जी पहचान नहीं सकेंगे कि असली घी है या नकली है। मेरा गांव वालों के साथ साबक़ा पड़ा था जो असली घी खाते थे। मैंने उनसे कहा पहचानिये ये पूरियां असली घी की हैं या वनस्पति तेल की तो कहने लगे कि बडा अच्छा घी है साहब आपका। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि हमारा यह खयाल रहता है कि यह चीज़ वनस्पति की है। मैं फिर यह कहता हूं कि कोई यह नहीं चाहता कि वनस्पति को डिफेण्ड किया जाये कि वह कोई अच्छी चीज है।

श्री ए० बी० वाजपेयी : आप तो डिफेण्ड कर रहे है।

श्री कृष्ण चन्द्र : यह बात कोई नहीं मानता है कि और इस बारे में सदन के सदस्यों की दो राय नहीं हो सकती हैं। लेकिन जब यह कहा

[श्री कृष्ण चन्द्र]

जाता है कि जमाने की क्रिया हानिकारक नहीं है, उस से कोई नुकसान नहीं होता है, तेल के गुण कम नहीं होते तो फिर जमाने की क्रया को बन्द करने के लिये क्यों कहा जाता है । अगर वह हानिकारक केवल इसलिये है कि उस से मिलावट हो सकती है तो उस के लिये दूसरे उपाय ढूढ़ने चाहियें और उस को रोकना चाहिये ।

उपसभाध्यक्ष जी, आप जानते हैं कि रोज़ सदन में मिलावट के बारे में शिकायत की जाती है । कभी घी के बारे में शिकायत की जाती है, कभी हल्दी के बारे में, मिर्चों के बारे में, ज़ीरा के बारे में, धनिया के बारे में तथा किसी न किसी चीज़ के बारे में मिलावट की बात कही जाती है । आज ही अखबार में निकला है कि दिल्ली में कई चीज़ों में मिलावट पाई गई है आप लोगों ने हाल में भी आटे में ज़हरीली चीज़ के मिले होने के बारे में पढ़ा होगा । इस तरह से मसालों में भी जहरीली चीजें मिला दी जाती हैं और लोग उनको खाते हैं । मिलावट का जो रोग है वह सर्वव्यापी है । यह अलग चीज़ है कि वनस्पति के साथ शुद्ध घी आसानी से मिला दिया जाता है । बनस्पति की वजह से शुद्ध घी का मिलना असम्भव हो गया है । इस को रोका जाना चाहिये । लेकिन क्या यह ज़रूरी है कि अगर हम वनस्पति का बनाना बन्द कर दें तो शुद्ध घी में मिलावट रुक जायेगी । आप यकीन मानिये अगर आप आज यह तेल बन्द कर देते हैं तो बाज़ार में ब्लैक मार्केट के रूप में कोई ऐसी चीज़ आ जायेगी जो शुद्ध घी में आसानी के साथ मिलाई जा सकती हो और वनस्पति से ज्यादा हानिकारक हो । हल्दी, मिर्च और जितने भी मसाले हैं, उन में इसी तरह की बात होती है ।

दूसरी बात जो सदन में कही गई है वह यह है कि दुनिया भर में जो मांसाहारी लोग हैं अगर वे वनस्पति खायें तो कोई हर्ज नहीं है क्योंकि मांस मे बहुत पौष्टिक पदार्थ मिल जाते हैं । अगर उन्हें घी पौष्टिक पदार्थ के रूप में न भी मिले तो उनके लिये कोई खास बात नहीं है । मांस में पौष्टिक पदार्थ मिल जाते हैं इसलिये अगर वे लोग बनस्पति खायें तो उन के लिये वह हानिकर नहीं होता है । इस वास्ते मारगेरीन का रिवाज भले ही उन मुल्कों में जहां मांस खाया जाता है, प्रचलित हो गया हो लेकिन इस मुल्क में जो शाकाहारी देश है उसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिये । मैं बड़ी नम्रता के साथ और बड़ी विनम्रता के साथ . . .

श्री शीलभद्र याजी : हिन्दुस्तान में मांस खाने वाले ज्यादा हैं बनिस्बत घास खाने वालों से ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): This has nothing to do with it. The Bill seeks only to prevent hydrogenation; not consumption of vegetable oil.

श्री कृष्ण चन्द्र : मैं यह कहना चाहता हूं कि जो वनस्पति है वह शाकाहारियों के लिए बहुत अच्छा है । यह ज़रूरी नहीं हैं कि एनिमल फ़ैट खाया जाय, एनिमल फैट के बिना आदमी ज़िन्दा नहीं रह सकता है, उसके बिना तो स्वास्थ्य नहीं बन सकता है, यह ग़लत बात है । कुदरती तौर पर अगर देखा जाये तो गाय का दूध, भैंस का दूध, आपके लिए नहीं बना है, ईश्वर ने कुदरती तौर पर यह दूध उसके बच्चों के लिए बनाया है । आदमी का जो बच्चा दूध पीता है वह अपनी मां का दूध पीता है और मां का दूध किसी दूसरी जगह नहीं विकता है । गाय और भैंस का जो दूध है वह कुदरती तौर पर उसके बच्चों के लिए बनाया गया है । यहां पर महात्मा गांधी जी के बारे में बड़ी बड़ी मिसालें दी गई हैं लेकिन महात्मा गांधी जी ने खुद अहिंसा के ख्याल से दूध पीना छोड़ दिया था ।

एक माननीय सदस्य : उन्होंने बकरी का दूध पीना शुरू कर दिया था ।

श्री कृष्ण चन्द्र जब गाधी जी बीमार हुए थे, तो लोगों ने कहा था कि आपने जो दूध न पीने का व्रत लिया था वह तो गाय के दूध के लिए लिया था, बकरी के दूध के लिए नही लिया था। आपका सकल्प तो पूरा हो गया है इसलिए अब आप बीमारी के समय दूध ले लीजिये। इसी वजह से उन्होने बकरी का दूध लेना स्वीकार कर लिया था। शाकाहारियों को तो गाय का दूध नही लेना चाहिये। हमें दूसरी चीजो में भी पौष्टिक पदार्थ मिल सकते है। अगर पौष्टिक पदार्थ और चीजो में मिल सकते है, वनस्पति पदार्थ में मिल सकते है तो उन्हे लेना चाहिये। जो शाकाहारी लोग हैं वे मास के बजाय ऐसी चीजे खा सकते है जिनमे पौष्टिक पदार्थ हों। अगर हम घी की जगह पौष्टिक पदार्थ और चीजों में प्राप्त कर सकते है तो अधिक अच्छा हे।

आखिर में एक बात मै यह अर्ज करना चाहता हू श्री वाजपेयी जी ने बतलाया कि घी का प्रोडक्शन हमारे मुल्क में कम हो रहा है। स्टैटिस्टिक्स एक ऐसी चीज है जो कभी कभी बडा धोका देने वाली होती है। मै जो फीगर्स लाइब्रेरी से Statistical abstracts से लाया हू, उससे मालूम पडता है कि हमारे यहा घी का प्रोडक्शन बढ रहा है। मेरे पास जो फीगर्स है वे सही हैं, इस बात की मै गारटी तो नही दे सकता हू। वाजपेयी साहब कहा से लाये है? उन्होने जो फीगर्स बतलाये वे ही सही है, यह भी नही कहा जा सकता। मेरे पास जो फीगर्स है उसके मुताबिक सन् १९४७ में ७७ ८३ लाख मीट्रिक टन घी का उत्पादन हुआ और सन् १९५६ मे ७८·५० लाख मीट्रिक टन घी का उत्पादन हुआ। हमारे घी का प्रोडक्शन बढा ही है घटा नही है। दूध का प्रोडक्शन पिछले दस वर्ष में ३० प्रतिशत बढा है। मै इस सम्बन्ध मे यह निवेदन करना चाहूगा कि जहा तक हो सके हमें घी के बजाय तेल का इस्तेमाल बढाना चाहिए। तेल के बारे में मै यह कहूगा गवर्नमेंट को इस तरह की कार्यवाही करनी चाहिए कि जिन वनस्पति कारखानो में वनस्पति तयार होता है वहा पर तेल भी तैयार किया जाना चाहिए। इस तरह से ये कारखाने दो काम कर सकते हैं। वनस्पति तेल जो बनाया जाता है वह वनस्पति पदार्थों से बनाया जाता है। इन कारखानो में पहले इन पदार्थों से तेल निकाला जाता है और उसे शुद्ध किया जाता है। अगर उसका रग खराब है तो उसको डीकलराइज किया जाता है, अगर उसमें दुर्गध होती है तो वह दूर की जाती है। अगर उसमें कोई तत्व हानिकर हो तो उसे निकाल दिया जाता है। इस तरह से रंग के खयाल से, दुर्गन्ध के खयाल से और किसी हानिकर तत्व के खयाल से, इस तेल को शुद्ध कर दिया जाता है और फिर उसको जमाने की क्रिया की जाती हैं। मै गवर्नमेंट से यह प्रार्थना करूगा कि वे इन फैक्टरियो के लिए यह मजबूरी कर दे कि व जमे हुए तेल के साथ शुद्ध तेल भी बेचा करे। अगर बाज़ार मे अच्छा तेल मिले जिसमे दुर्गन्ध न हो, जिसमें मिलावट न हो, जिसमे कोई खराबी न हो, तो लोग इसका इस्तेमाल करेगे। अगर गवर्नमेंट ने इस तरह का इन्तजाम कर दिया तो इस तरह से तेल का प्रचार इस देश मे बढेगा और वनस्पति को लोग कम खरीदेगे।

इस सदन मे बहुत से लोगो ने महात्मा गाधी और श्री राजेन्द्र प्रसाद का नाम लिया। श्री वाजपेयी जी ने भी हमारे पूज्य नेताओ के नाम लिये, बहुत बडी बडी मिसाले दी, यह बखान किया, वह किया। ये सब लोग हमारे काग्रेस के नेता है और हम उनके पदचिह्नों पर चलते है और हमारी सरकार भी उनके खिलाफ नही जा सकती है। जो बाते उन्होने उनके बारे मे कही है वे सब तोडमरोड कर कही है। उन्होने एक बात यह कही कि आज वनस्पति की बदौलत जो छोटे छोटे धन्धे हैं वे सब फेल हो रहे है। यह सही है वनस्पति की वजह से आज बडे बडे कारखाने खुल गये है और उनमे हजारो आदमी काम कर रहे है। लेकिन महात्मा गाधी जी का आदर्श

यह था कि हर आदमी अपनी जरूरत की चीज़ खुद तैयार करे, अपना खुद घी निकाले और खाये । तेल निकाले और खाये । कपड़ा बनाये और पहने, इस तरह का उनका आदर्श था । आज हम उस आदर्श के मुताबिक़ कहां चलते हैं ? अगर हम उनके कहने के मुताबिक़ चलते तो जो गांव की इकौनोमी है वह वहां के लोगों के हाथों में रहती । लेकिन इसके साथ ही साथ महात्मा गांधी जी ने यह कभी नहीं कहा कि तुम तेल मत खाओ, घी खाओ । वे खुद तेल का इस्तेमाल करते थे ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): You said some time back that that was your last word. Please conclude because there are other Members who wish to speak.

श्री कृष्ण चन्द्र : महात्मा गांधी जी की जो यह मिसाल दी जाती है कि उन्हों ने ऐसा कहा था और ऐसा नहीं किया जा रहा है वह न कहा जाता तो अच्छा होता । मेरा नम्र निवेदन है कि इस मामले पर हमें भावनाओं के साथ नहीं बह जाना चाहिये । वनस्पति के ऊपर हमें कुछ ऐसा प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये, इस तरह से उसे रंग दिया जाना चाहिये जिस से वह खुले तौर पर शुद्ध घी में न मिलाया जा सके और लोगों को मिलावट करने की खुली छूट न मिल सके । जमाने की क्रिया को रोकने से जो मन्तव्य है, जो यह उद्देश्य है, वह पूरा नहीं होगा ।

3 P.M.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: Mr. Vice-Chairman, I rise to oppose the motion of my friend, Mr. Vajpayee, in connection with the Prevention of Hydrogenation of Oils Bill, 1962. The Bill is not so simple as it looks. It involves in itself more than one problem of the country as a whole. First of all, there is the agricultural problem involved in this affair. Secondly, there is the livestock problem of the country and, thirdly, the nutrition problem of the country. These three problems are involved in this Bill. Let us see from the agricultural point of view what place this industry has in this country. It is well-known that the main source for the production of vegetable ghee in the country is groundnut oil. By far ninety per cent. of vegetable oil comes from the groundnut crop. Groundnut crop, of course, is not a crop of this country. It is an exotic crop. It was imported into this country about fifty or sixty years ago, I do not know, probably from Mauritius or some place like that.

SHRI P. RAMAMURTI (Madras): More than hundred years ago.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: Anyway, it is not the original crop of this country. It was an introduced crop and now year after year this crop has been gaining greater popularity in the agricultural sector of our country.

SHRI P. RAMAMURTI: Even in the 'Sangam' literature we come across this crop.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): This is modern history.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: It is Vedic history probably. Anyway, the present position of the crop is that it has a very dominant part in agriculture as a whole, particularly in the case of dry cultivation in the country. It is a leguminous crop. It is very well-known that any leguminous crop will build up the nitrogen content of the soil and it enriches the soil. If you grow only cereals year after year, the soil will get impoverished. Of course, agriculture is the story of crops. But if you introduce in between a leguminous crop like groundnut, the soil will get enriched considerably. But for the introduction of the groundnut crop into the agricultural system of this country, probably our soil would have been more impoverished than what it is today. Therefore, from that point of view, I say that the introduction of the groundnut crop into our system of agriculture

[Shri N. Sri Rama Reddy.]

has been a great blessing. This is very well-known, especially to the farmers and to those hon. Members of this House who come from a dry land tract. That being the case, what is the position? This crop is very important to agriculture. Without this crop, of course, our agriculture will not be better. So, we have to increase it. Year after year, it is increasing. I may just quote some figures with regard to the production of this groundnut oil. The other oils are well-known, forming a small portion of the entire edible oils. It was 43 lakh tons in the year 1956-57. The production is increasing year after year. The production of all the edible oils put together has increased from 57 lakh tons to 68 lakh tons.

There is also another aspect. There is the nutritional aspect. The per acre yield in terms of calorific value of groundnut is any day much greater than what a cereal crop can offer you by way of calorific value. I am sure everybody knows what it is. Probably it is twice or thrice. I am not able to say exactly what it is, but the per acre yield in terms of calorific value will be twice or thrice. Therefore, from the nutritional point of view, this is a very important factor. The question under consideration is whether hydrogenation will help or will not help. I could not understand Mr. Vajpayee fully, but from what little I could understand I came to the conclusion that he had greater objection to the mixing of hydrogenated oil, as a source of adulterant, with natural ghee. If that is his main contention, I am one with him. I agree wholeheartedly that what is vanaspati should be sold as vanaspati and what is ghee must be sold as ghee. But the question of adulteration is a different chapter altogether. The prevention of hydrogenation does not cure that problem, because as my friend was saying . . .

SHRI AKBAR ALI KHAN: He had said that that itself was injurious to health.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: I do not know. If that is so, it is a different thing. But then there is an ocean of evidence against even that point. Of course, you will all agree, you will concede one point, namely, the Westerner is more scientific-minded than any of us here.

SHRI A. B. VAJPAYEE: No.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: As a nation. I am talking as a nation. About six or seven years ago I was touring Denmark. Denmark, you will concede, is a country of milk though not of honey. Everywhere every cow produced milk. I will come to that later. What does Denmark do? Denmark exports all its butter to England.

SHRI A. B. VAJPAYEE: Not all.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: Almost all. I can give you the figures. More than 75 per cent. of the butter is exported outside Denmark and oils are imported. They are hydrogenated and consumed. What is the *per capita* consumption of oil as against butter, butter which they produce far in excess of vegetable oil? This is the position. Denmark consumes vanaspati 40·1 pounds per head per year as against 18·5 pounds of butter. Netherlands, which is equally a very great country with regard to milk production, consumes 40·8 pounds of vanaspati per year as against 6·2 pounds of butter, West Germany 28·1 pounds as against 14:1 pounds of butter. Regarding the U.K., it is 26:96 pounds vanaspati against 13:1 pounds of butter. The U.S.A. probably can boast of both milk and honey and everything in their country. Their figures are 18·4 pounds of vanaspati and 8·7 pounds of butter.

SHRI ARJUN ARORA (Uttar Pradesh): And their money is flowing in other countries.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: That does not matter. In any case that is the position.

DR. M. M. S. SIDDHU: Is it all margarine product?

SHRI N. SRI RAMA REDDY: Not tallow, not animal fats.

DR. M. M. S. SIDDHU: It does not refer to them because all over Europe and other places they use salad oil which is an oil, not hydrogenated oil.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: This is my information. These are the figures which I have got from the Ministry direct, not the figures compiled by me.

SHRI GOVINDAN NAIR (Kerala): Why do you expose the source of your information?

SHRI N. SRI RAMA REDDY: It does not matter. Figures are figures. They cannot be altered to suit our will or somebody else's will. Now, I come to this point. As I said, the Westerner is more scientific-minded. They have been consuming a far greater quantity of hydrogenated oil than ghee or butter and they have not suffered on account of that. This has been happening for years now. The results could not have been concealed. If hydrogenated oil is injurious to the health of the human being, it could not have been concealed by all the people, by all the nations, several nations put together. Not only that. What does our scientific investigation bring out? In our scientific investigations we have not been prejudiced. We are not predisposed towards hydrogenated oils in this cuntry. We are also very anxious. Our experiments were done by scientific men. Mr. Vajpayee might have been prejudiced against them. He has a philosophy of his own to interpret all this process.

SHRI A. B. VAJPAYEE: Which my hon. friend cannot understand.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: It is already certain that I shall never understand Jan Sangh.

SHRI A. B. VAJPAYEE: He does not know the language to understand my philosophy.

SHRI N. SRI RAMA REDDY: Anyway, I should seek more reasons than one for a motion of this kind. So, science also is in our favour. We should develop a scientific temper. Our Prime Minister often says that the development of a scientific temper is all the more necessary for our improvement. If we do not develop a scientific temper, to that extent we shall be lagging behind in our progress. Science bears it out. Let us believe in scientific facts and figures. A number of experiments have been conducted on human beings and animals by biological processes which have been studied thoroughly and the investigation shows that there is absolutely no harm. If on sentimental grounds you ask why this hydrogenated oil should be made to look like ghee or why oil should be converted into vanaspati by hydrogenation, it is a different matter. If sentiment comes in the way of scientific investigations, certainly we shall miss the truth. We shall miss it for all time to come probably to the great detriment of the country as a whole. Therefore, I say that science has borne out that there is no harm in consuming these hydrogenated oils. So we shall do it. We shall need it for more than one reason because we cannot afford to give our people milk or butter. We have not been able to do so.

Sir, what is the position with regard to animal husbandry in the country today? From where are we to derive every ounce of milk, every ounce of butter and ghee in this country? Probably my friends of the Jan Sangh Party talk more of the glories of the cows in this country than making them feel much happier and much better fed. I have toured entire Europe where the cows are butchered and their meat consumed. I have not seen a single cow emaciated or looking bony. I have been able to find none like that at all in Europe. Whereas in this country herds and

[Shri N. Sri Rama Reddy.]

herds are going about—where?—simply to trample on the soil where there is not a blade of grass, on the maidan where there is not a blade of grass to be found anywhere. But herds and herds are going about—where, for what purpose?—only wasting their muscle and energy without obtaining any feed. We are not living in those Puranic days when there were forests in plenty, huge forests, and fewer men and a greater number of cattle. Therefore, it was probably possible in those Puranic days that milk and honey were flowing in this country. I would like to refer to the position of animal husbandry now in this country. It is deplorable. Several investigations have been made in this country which show that one-fourth of the population of the domesticated livestock in this country are there to feed the population at the rate of 4·5 ounces of milk per head per day Please note—4·5 ounces of milk per head per day. The majority of the people will never have seen butter and milk. It is a pittance, 4·5 ounces. Several States and the State from which I have the honour to come can afford only 1·5 ounces of milk per head per day. That is the condition which we are in. I am here referring to one-fourth of the population in terms of milk-yielding animals, and not to bullocks and other younger livestock. According to the latest figures there are 80 million she-buffaloes and cows that are capable of yielding milk, to give 4·5 ounces of milk per head per day. What is the consumption in European countries where they kill the cow and eat it too —they have no qualms about it. In Holland the consumption is 35 ounces per head per day; Finland goes up to as far as 62 ounces; the U.K. 35 ounces. No nation consumes less than 30 ounces per head per day in all those countries, whereas we in this country cannot give more than 4·5 ounces of milk per head per day. Where do we get this butter or ghee from? Is it possible to make them? Where is the alternative to prevent people from taking these hydrogenated oils? I have no objection and no one should have any objection if anybody consumes them. But I am only bringing this point that we will never be able to afford to give them ghee. It is a great doubt for me whether in another quarter of a century we will be able to give them enough of milk and ghee in this country. Take any breed in this country. Its yield per day will not exceed five pounds or six pounds. (*Interruption.*) Take any breed in this country. It has been completely and thoroughly investigated and found out that the yield is not more than five pounds or six pounds per day. What is the yield of milk per cow per day in those European countries? The Holstein cow gives sixty pounds and the Jersey cow gives forty pounds.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): Do you think that we should go into that question now?

SHRI N. SRI RAMA REDDY: We cannot get that because the cow has got to be properly protected. Sir, I am only pointing out that under this Resolution impliedly this livestock problem comes in, impliedly the agriculture problem comes in, and impliedly the nutrition problem comes in. Without a broad picture of the entire position we will not be able to take a dispassionate view. It is merely because Mr. Vajpayee has brought this Resolution I do not want to oppose it merely for the sake of opposing it. If facts and figures require that his Resolution must be opposed, let us do so That is what I am placing before this House. Our cattle are emaciated. Not even fifty per cent. of the cows and buffaloes are getting their full feed, that is 50 per cent. of them are starving. That is the true position. Before we worship the cow we must try to feed it properly. To get the best out of the cattle we must improve them. That is the necessity in order to make this country affluent in ghee In the European countries, they ask: "Do you add water to the milk? Why should you do it? How does it arise?" I am also a dairyman.

In this country it is often said that we add milk to the water and not water to the milk

SHRI GOVINDAN NAIR So he adds water

SHRI N SRI RAMA REDDY That is a different story I do not do it I do not do it because I have taken to methods of improving the cow on the lines the Europeans do My cows are improved to a very great extent My cows today are yielding on an average twenty pounds The breeding work had been started in Bangalore 25 years ago, and today each cow yields 25 pounds because we imported bulls from foreign countries and started breeding Today the average yield is 20 pounds Therefore, there is no necessity for me to add water to the milk

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M GOVINDA REDDY) That is perhaps because people these days have no good digestion

SHRI N SRI RAMA REDDY Now, Sir, it has been borne out that these hydrogenated oils do no harm to anybody My friend was talking of some colour for detection of adulteration in ghee Certainly I am one with him in this and the Government should do their best in this respect If they could produce a colour useful enough to be mixed with vegetable oil which if mixed with ghee will produce a different colour, that will be a great blessing certainly We shall at least know where we are Therefore, I am one with him in the matter of urging the Government to produce a colour which is suitable as an admixture to the vegetable oil which differentiates it from the natural ghee. This is very very necessary, and I am quite sure it could be done Therefore, Sir, my plea is that this Resolution has been often considered in this House and it has been thrown out also as not being worthy of being considered It is coming up in one form or other year after year It takes our time, it takes the time of this hon. House. I think we have to cry a halt to this These oils at least provide some nutrition to our people. The groundnut oil has harmful effects. It has bitter taste We cannot even smell anything prepared out of groundnut oil, if it is pure groundnut oil Similar is the case with other oils They are so bitter that you cannot consume them Therefore, I suggest that this Resolution should be thrown out, and I hope that the House will do so

श्री जयनारायण व्यास उपसभाध्यक्ष जी, मैं बहुत कम बोलने वालो मे से हू और आज तो और भी कम बोलूगा क्योकि मुझे अभी पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी मे जाना है। मैं ने इस सम्बन्ध मे सारे भाषण सुने और मुझे आश्चर्य हुआ कि जो मुख्य विधेयक है उस विधेयक की बात तो कम कही जा रही है और दूसरी बाते बहुत कही जा रही है। यह विधेयक छोटा सा है और इस मे यह बात कही गई है कि वनस्पति तेल मे जो वायु सचारित की जाती है वह धधा बन्द कर देना चाहिये। वह वायु सचारित क्यो की जाती है यह ज़रा सोचने की बात है। वायु सचारित इसलिये की जाती है, जैसाकि श्री कृष्ण चन्द्र जी ने कहा, कि वह खूबसूरत दीखे, अच्छा दीखे। अब वह अच्छा दीखे, यह तो कोई मुश्किल बात नही है लेकिन इस तरह के पकवान उस के बनते है कि वायु सचारित तेल घी के साथ आराम से मिल जाता है। अब उस के बदले मे कृष्ण चन्द्र जी ने भी और मेरे साथी रेड्डी साहब ने भी यह कहा कि यह ठीक है कि यह जमाने की क्रिया तो चालू होने दो, लेकिन उस को रग दो। मैं अफसोस के साथ कहता हू कि यह रगने की जो क्रिया है वह शताब्दिया ले सकती है। वर्षों से हम इस काम के पीछे पडे हुए है और वाजपेयी जी ने अभी कहा था कि एक रग तैयार भी हुआ था लेकिन वह स्वीकृत नही हुआ, जैसाकि कृष्ण चन्द्र जी ने खुद कहा। अब यह स्वीकृत और अस्वीकृत होने के सिलसिले मे विशेषज्ञो की राय आती है। एक विशेषज्ञ कहता है कि वायु संचारित यह जो तेल है यह बहुत अच्छा है,

[श्री जयनारायण व्यास]

इस मे कोई नुक्सान नही है और मैं भी इस बात को मानता हूं कि हम को भी विज्ञान का आधार लेना चाहिये । जिस समय डा० सुशीला नायर ने यह बात कही थी कि इस हाइड्रोजेनेटेड आइल से हृदय रोग हो जाता है तब मुझे ऐसा खयाल हुआ कि वे विज्ञान विहीन नहीं थी, वे विज्ञान से शून्य नही थी । वे एक डाक्टर भी है, हेल्थ मिनिस्टर भी है । जैसाकि भार्गव जी ने बताया कि "रीडर्स डाइजेस्ट" मे एक आर्टिकल निकला है, किसी साइन्टिस्ट ने वह आर्टिकल लिखा था । तो वह कोई गैर वैज्ञानिक नही था, एक वैज्ञानिक था । इसलिय वैज्ञानिक लोगों की भी यह राय है कि यह तेल जो है, जस मे वायु संचारित की जाती है, वह तेल अच्छा नही है । मैं उस चीज़ में पड़ना भी नही चाहता—अच्छा है या बुरा है, इस बात को जाने दे । लेकिन यह बात बहुत सही है कि वह आराम से मिक्स होने के लायक है । कृष्ण चन्द्र जी ने कहा, हर एक चीज़ आजकल नकली बन रही है, हल्दी भी नकली बन रही है, चाय भी नकली बन रही है, धनिया भी नकली बन रहा है ।

श्री सत्याचरण (उत्तर प्रदेश) : चावल भी नकली बन रहा है ।

श्री जयनारायण व्यास : हां, चावल भी नकली बन रहा है । अगर ये सारी चीज़े नक़ली बन रही है और सब जगह यह वर्ण-सकर पना चल रहा है तो यह वर्णसंकर घी को भी होने दो, यह क्यों बचा रहे ? लेकिन मैं ऐसा समझता हू कि इस तरह से हाइड्रो-जेनेटेड आइल्स तैयार करना एक लालच है और जो व्यक्ति उस को घी के साथ मिला कर बेचता है उस मे भी लालच है और उस लालच के तत्व को हमें बढ़ावा नही देना चाहिये और अगर उस का जनसघ की तरफ से विरोध होता है तो मैं उस की चिन्ता नही करूगा । अगर समझदारी की बात जनसघ वाला कहता है तो मैं उस का समर्थन करूगा, अगर नही करता है तो विरोध करूगा । सिर्फ इसलिये कि समझदारी की बात जनसंघ से आई है तो उस का विरोध करना चाहिये, मैं इस को पसन्द नहीं करता ।

श्री अकबर अली खान : कोई नही करेगा । On merits only.

श्री जयनारायण व्यास: एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं । इस प्रस्ताव को रखने मे जो बातें कही गई है वे बाते भी निकाली जा सकती थी । हम को एक ही चीज़ के ऊपर कायम रहना चाहिये । महात्मा गांधी का भी नाम लिया गया । इस में कोई शक नही जैसाकि वाजपेयी जी ने कहा, कि महात्मा जी इस के खिलाफ थे । उन्हों ने कोटेशन भी दिये । कृष्ण चन्द्र जी ने भी यह बात कही कि महात्मा गांधी तेल के पक्ष मे थे । तेल के पक्ष में थे, इस में शक की बात नही है । मैं भी कुछ दिन महात्मा गांधी के आश्रम मे गया हूं । वह मक्खन खाने का मौका मिला है, तेल भी खाने का मौका मिला है, लेकिन हाइड्रोजेनेटेड आइल के खाने का मौका नही मिला है—यह मैं आप से कह दूं । लेकिन जहां तक इस जमे हुए तेल से ताल्लुक है, महात्मा जी के आश्रम मे यह कभी नही आया, फिर भी हम क्यो महात्मा जी के नाम को ले कर इधर उधर की बाते करें । जैसाकि अभी रेड्डी साहब ने कहा, हम को विज्ञान के आधार पर इस के ऊपर डिस्कशन करना चाहिये । लेकिन विज्ञान के आधार पर एक बड़ी मुश्किल आ जाती है । बड़े बड़े विशेषज्ञ भी होते है तो एक विशेषज्ञ एक बात कहता है, दूसरा दूसरी बात कह देता है । और, वह विशषज्ञ ही क्या जो एक दूसरे के खिलाफ बात न करे ? एक बात कह दी किसी ने तो दूसरे ने दूसरी बात कह दी । इसलिये मैं विशेषज्ञों पर भी बहुत विश्वास करना नही चाहूंगा । जो हमारे फूड मिनिस्टर हैं वे भी विशेषज्ञ हैं और हमारी हैल्थ मिनिस्टर तो खुद डाक्टर है, उनकी बात को मैं ज्यादा मानूगा । यह जो रीडर्स डाइजेस्ट या रूस के साइन्टिस्ट

की बातें कही गई है मैं उनकी बातों को उतना नही मानूगा । लेकिन फिर भी मैं एक बात मानता हू कि यह वनस्पति तेल मिक्स जल्दी हो जाता है । मैं राजस्थान का रहने वाला हू । जिस समय सन् १९४६ से भी पहले, बल्कि १९४० के आसपास, एक कमेटी जोधपुर में बनाई गई थी तो उस कमेटी में मैं भी था । उस कमेटी ने भी इस बात को बहुत गौर से सोचा और वह इस निर्णय पर पहुंची कि यह तेल हानिकारक है, इसलिये जोधपुर राज्य के अन्दर —उस वक्त जोधपुर स्टेट थी— इसको नहीं आने देना चाहिये, और वह नहीं आने दिया गया । उसके बाद जब मैं राजस्थान का मुख्य मंत्री भी था, मैं उसे रोके रहा, राजस्थान में भी हम उसको नही आने देते थे । सेन्टर से काफी जोर हुआ तो अब आने लगा है । इसके बाद यह कहना कि एक जगह आता है, दूसरी जगह नही आता है, तो यह आवागमन आप रोक नही सकते । इस आधार पर मैं कह सकता हू कि राजस्थान को उससे काफी नुकसान हुआ है ।

राजस्थान में बहुत सी किस्मों की गायें हैं—कांक्रेच, नागौरी, गिर, रेड सिंधी ब्रीड की हैं और वे सारी गायें जो हैं, आप आश्चर्य करेंगे, उनका पालन करने वाले अधिकतर मुसलमान हैं । एक दफा दुष्काल पड़ा तो गायें भूखी मर गईं और एक मुसलमान कुए में गिर गया और अपने आप को मार दिया । मैं समझता हूं, वे गो भक्त थे । तो गऊ के मामले को केवल सेन्टीमेंट के साथ मैं नहीं देखता हूं, मैं गाय के मामले को आर्थिक आधार के तौर पर देखता हूं, वैज्ञानिक आधार पर देखता हूं । इस ख्याल से मैं ऐसा मानता हूं कि यह बात ठीक है कि हजारों लाखों रुपया इन तेलों को बनाने की मशीनरी में लग रहा है । आप तेल बनाते रहिये, कौन मना करता है ? सिर्फ वह जो हवा प्रवेश करने की मशीन है, अगर ज़रूरत पड़े तो सरकार को वह मशीन खरीद लेनी चाहिये और किसी दूसरे काम में लगा दे । ये तेल बनते रहें, शुद्ध बनते रहें, लेकिन साथ ही साथ उसमें हवा का प्रवेश नहीं रहना चाहिये । यह हवा से जो जमाने की बात कही जा रही है वह तो केवल एक बहाना मात्र है और उस बहाने के आधार पर उस तेल को घी के साथ मिलाने का मौका दिया जाता है ।

अभी भार्गव जी ने बताया था कि गायों को क्या खिला देते हैं, क्या पिला देते हैं । वे क्या करते हैं कि अधिक मिकदार में दही जमा लेते हैं और उसमें यह वनस्पति डाल देते हैं और उसके बाद उस दही का मक्खन निकालते हैं और उसके साथ यह चला जाता है । इस जमाने की क्रिया ने हमको बेईमान बना दिया है, अपने देश को बेईमानी से बचाने के लिये, इसको जमाने की क्रिया को रोकना चाहिये । अगर यह ख्याल करे कि हल्दी भी नकली है, मिर्च भी नकली है, चाय और दूसरी चीजे भी नकली हैं, तो इस वर्णसंकरता में कैसे हम अपने देश को उन्नत करेंगे । इसे तो हम देश को बेईमानों के हाथों में सौंप देंगे । कुछ व्हेस्टेड इन्टरेस्ट्स हैं जो सीधे और टेढ़े तरीके से हमारे खिलाफ काम करेंगे, जब हम इस चीज़ को लायेंगे । और उनके पास लाखों रुपये हैं, इन व्हेस्टेड इन्टरेस्टस के घरों में जाकर देखिये । वे डेरी भी रखे हैं, वे डेरी का दूध लेते हैं, शुद्ध घी बाहर से मंगाते हैं, अपना बनाया नकली घी नही खाते । हमसे बहुत से लोग कहते हैं, घी यहा से ले आए । तो यह घी हमारे लिये काफी नहीं है, हम तो घी खाये हुए हैं और उसके बगैर नहीं रह सकते । अब रही तेल की बात, यह भी शौक से खाते हैं, खाने में कोई बुराई की बात नहीं है । जब कृष्णचन्द्र जी बोल रहे थे तो मैंने पूछा भी था कि पकौड़ी व्हेजीटेब्ल घी से कभी नही बनती है, पकौड़ी शुद्ध तेल से ही बनती है और तेल की चीज तेल से बनती है, घी की चीज़ घी से बनती है । और जो यह वर्णसंकर चीज है इसको पैदा नहीं करना चाहिये, इसको हटाना चाहिये । यही शब्द मे कहना चाहता हू । धन्यवाद ।

श्री पी० रामामूर्ति : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने श्री वाजपेयी जी की दलीलें सुनीं और हो सकता है कि मे हिन्दी में अच्छी तरह से न बोल सकूं, इसलिए आप मुझे क्षमा करेंगे ।

श्री अर्जुन अरोड़ा : आपने तो काशी में शिक्षा प्राप्त की है तो क्या शुद्ध हिन्दी नहीं बोल सकेंगे ?

SHRI P. A. SOLOMON (Kerala): Is it necessary to speak in Hindi on this particular Bill?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): It is the Member's desire. Once a way it is a good change for Mr. Ramamurti also.

श्री पी० रामामूर्ति : वनस्पति का जो विवाद है वह हमारे यहां नहीं होता है । इस तरह का विवाद न तामिलनाड में होता है, न केरल में होता है और न आन्ध्र प्रदेश में होता है, यह तो हिन्दुस्तानियों का विवाद है, जो हिन्दी बोलने वाले हैं उनका विवाद है ।

एक माननीय सदस्य : क्या आप हिन्दुस्तानी नहीं हैं ?

श्री पी० रामामूर्ति : हम हिन्दुस्तानी भाषा नहीं बोलते हैं, यह तो आपकी भाषा है ।

شریمتی انیس قدوائی : (اتر پردیش) تامل اور تیلگو کہاں کی ہیں کیا وہ ہندوستانی بھاشائیں نہیں ہیں-

†[**श्रीमती अनीस किदवई** (उत्तर प्रदेश) : तामिल और तेलगू कहां की हैं क्या वे हिन्दुस्तानी भाषाएं नहीं हैं ?]

श्री पी० रामामूर्ति: हिन्दुस्तान में हैं और हिन्दुस्तानी भाषा दूसरी चीज़ है । वाजपेयी जी ने जो यह बात कही है कि वनस्पति का बनाना रोक दिया जाना चाहिये तो यह तो बिल की बात हुई । लेकिन जब वे यहां पर बोलते हैं तो उसमें दूसरी चीज़ को मिला देते हैं । उन्होंने जो बिल रखा है उसमें वनस्पति को बन्द करने की बात है क्योंकि वह शुद्ध घी में मिला दिया जाता है जिसकी वजह से मिलावट हो जाती है । तो इस के लिए कोई दूसरा उपाय किया जाना चाहिये था, कोई रंग निकाला जाना चाहिये था जिससे वह शुद्ध घी में न मिलाया जा सके । मैं इन्हीं दो बातों पर बोलना चाहता हूं ।

सब से पहली बात मैं जो कहना चाहता हूं वह यह है कि आज जिस चीज के बारे में चर्चा हो रही है, वह हिन्दुस्तान के अवाम, जनता, की बात नहीं है । मैं आप को यह बात बतलाना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में इस वक्त घी कौन लोग खाते हैं । हमारे देश के किसान घी का इस्तेमाल नहीं करते हैं, हमारे देश के मजदूर घी का इस्तेमाल नहीं करते हैं । किसान जिस के पास एक एकड़ या दो एकड़ जमीन है, वह घी का इस्तेमाल नहीं कर सकता है । हिन्दुस्तान के मध्यम श्रेणी के लोग आजकल भी घी का इस्तेमाल नहीं कर सकते है । यह तो जो गरीबों के ऊपर के लोग हैं, धनाड्य लोग हैं, उन के खाने की चीज है और इसी वास्ते हम पार्लियामेंट में इस चीज के ऊपर इतनी बहस करते हैं ।

डा० श्रीमती सीता परमानन्द (मध्य प्रदेश) : बनस्पति तो गरीब भी यूज करते हैं ।

श्री पी० रामामूर्ति : हमारे देश में घी इस्तेमाल करने वाले बहुत कम लोग हैं । यह भी सच बात है कि कुछ वर्षों से घी की खपत कम हो गई है और वह क्यों कम हुई है, इस के बारे में भी आप को बतलाऊंगा । मैं इस बात को नहीं मानता कि बनस्पति की उपज ज्यादा होने की वजह से हिन्दुतान में घी की खपत कम हो गई है । आज हिन्दुस्तानियों

†[ ] Hindi transliteration.

के पास पैसा कम हो गया है और जैसे जैसे पैसा कम होता जाता है वैसे वैसे घी की खपत कम होती चली जाती है । यह हमेशा देखा गया है कि जिस के पास पैसा होता है वही घी खाता है और जिस के पास पैसा नहीं होता है वह घी नहीं खा सकता है । इसलिये यदि आप हिन्दुस्तान में घी का उत्पादन ज्यादा बढ़ाना चाहते हैं और सचमुच गोरक्षा करना चाहते हैं तो उस के लिये दूसरा रास्ता है और उस दूसरे रास्ते पर जाना चाहिये । इस तरह से नहीं कि वनस्पति का उत्पादन बन्द कर देने से घी की उपज ज्यादा हो जायेगी ।

मैं यह बतलना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में चाय ५० साल से लोग पीने लगे हैं और हर मध्य श्रेणी का आदमी आजकल चाय पीता है और कॉफी पीता है । आप सब लोग जानते हैं कि चाय और कॉफी में कितने दूध की खपत हो जाती है । इस के बाद आप कहे कि दूध में मिलावट होती है, घी में मिलावट होती है, इसलिये दूध का बनना रोक दिया जाना चाहिये । आप शायद यह भी कहेंगे कि चाय और कॉफी में दूध खत्म हो जाता है इसलिये चाय पीना रोक दो, कॉफी पीना रोक दो और कानून इस तरह का बनाया जाना चाहिये जिस से चाय और कॉफी का पीना रोक दिया जाय । हिन्दुस्तान में घी की कमी हो गई है इस लिये कॉफी को बन्द कर दो, चाय को बन्द कर दो, सब चीज बन्द कर दो । इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि इस चीज के लिये रास्ता दूसरा है और वह रास्ता यह है कि हमें हिन्दुस्तान की गरीबी को दूर करने के लिये उपाय करने चाहियें, । इस चीज के ऊपर हमारी निगाह जानी चाहिये बजाय टेढ़े रास्ते पर जाने के । श्री वाजपेयी जी ने बड़ी जोरदार स्पीच दी कि इस वनस्पति को बन्द करने से घी की उपज हिन्दुस्तान में ज्यादा हो जायेगी । मैं इस बात को पार्टी नजर से नहीं देखता हूं लेकिन मैं यह बात कहना चाहता हूं कि वाजपेयी जी ने खुद ही इस में अपनी पार्टी की बात डाल दी है, अपनी पार्टी का नजरिया डाल दिया है, इस के लिये मैं क्या करूं । इस बिल में गोरक्षा की बात जोड़ने का क्या मतलब है और उस के क्या माने हैं ? क्या आप इस तरह से गोरक्षण कर सकते हैं ? मेरा कहना यह है कि श्री वाजपेयी जी इस बात में अपनी पार्टी जनसंघ के नजरिये को लाना चाहते हैं ताकि किसी न किसी रूप में जो मूलभूत उन की पार्टी का सिद्धान्त है वह यहां पर आ जाय । अगर वे इस तरह की बात यहां पर करते हैं तो इस में उन का कोई कुसूर नहीं है । लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि हम भी गोरक्षण चाहते हैं लेकिन जिस तरह से जनसंघ वाले गोरक्षा की बात करते हैं उस तरह से हम नहीं चाहते हैं । वे तो यह कहते हैं कि जो दुबले पतले गाय भैंस आदि हैं, हिन्दुस्तान के लिए किसी काम के नहीं हैं, उनको किसी न किसी तरह से थोड़ा खाना खिला दो और इस तरह से गोरक्षण हो जायेगा । मैं समझता हूं कि हिन्दुस्तान के उत्तरी भाग में गोरक्षण के नाम पर और धर्म के नाम पर तरह तरह की बातें की जाती हैं लेकिन गोरक्षा नहीं की जाती है । उन के लिये तो गोरक्षा एक पाखंड सा बन गया है इसलिये वे गोरक्षा के महत्व को नहीं समझते हैं । अगर आप सचमुच गोरक्षण चाहते हैं तो उस के लिये हिन्दुस्तान में दूसरी चीज करनी होगी । उस के लिये जमीन देनी होगी और जो अच्छे अच्छे ब्रीड के जानवर हैं उन का पालन करना होगा । अगर हम इस तरह की बात नहीं कर सकते हैं तो गोरक्षा नहीं कर सकते हैं । यहां पर गोरक्षा की जो बात कही जाती है वह तो सिर्फ वोट कैच करने के लिये एक तरीका है । इस तरह से गौरक्षण नहीं किया जा सकता है ।

इस सिलसिले में मैं एक बात कहना चाहता हूं कि सन् १९२६ में आल इंडिया पार्टीज कांफ्रेंस हुई थी; उस का ध्यान मुझे इस समय आ गया है । उस समय कांग्रेस के प्रेजीडेन्ट हमारे मद्रास के श्री श्रीनिवास अयंगार थे और वे ही उस कांफ्रेंस के प्रेजी

[श्री पी० रामामूर्ती]

डेन्ट भी थे । उस कांफ्रेंस में हिन्दू मुस्लिम यूनिटी की बात चल रही थी । मैं समझता हूं कि उस समय कांफ्रेंस में स्वामी श्रद्धानन्दजी हों या कोई दूसरा आदमी हो, उस ने आते ही कहा "बैन काउ स्लाटर" । इस पर श्री अयंगार जी ने कहा कि उत्तरी भारत के ब्राह्मण तो अपनी गायों को बूचड़ों के हाथ बेच देते हैं और पैसा ले कर बूचड़ कराते हैं फिर उस के बाद कहते हैं कि उस के मारने वाले को रोको । आप लोगों के अन्दर ऐसे लोग हैं जो पैसे के वास्ते अपनी गायों को बेचने के लिये तैयार रहते हैं, उन को आप क्यों नहीं रोकते, क्यों नहीं उन के लालच को आप पहले रोकते । आप उन को तो नहीं रोकते और जो उन का खरीदने वाला है उस को रोकने की बात कहते हैं । इस तरह से गोरक्षण कैसे हो सकता है ? यह ताज्जुब की बात है कि श्री अयंगार खुद एक ब्राह्मण थे और उन्हों ने इस तरह की बात कही । ऐसी बात नहीं है कि वे गोरक्षण नहीं चाहते थे बल्कि उन का कहना यह था कि आप लोग इस तरह की बात करते हैं कि पहले "म्यूज़िक बिफोर मास्क" वाली बात करते हैं, फिर कहते हैं कि हिन्दू मुस्लिम झगड़ा न हो । इसी तरह की बात आप इस चीज़ के लिये भी कह रहे हैं । इसलिये मेरा कहना यह है कि जिस तरह से आप गोरक्षण की बात कहते हैं और चाहते हैं उस तरह से नहीं हो सकता है । हमें इस चीज़ को बुद्धिमत्ता से ठीक करना होगा । वनस्पति को बंद करने से कोई फायदा नहीं होगा । यह कहा जाता है कि हाइडरोजनेटेड आयल का बनाना बन्द कर दिया जाना चाहिये । तो मैं आप से पूछना चाहता हूं कि इस से क्या फायदा होगा और मैं समझता हूं कि इस से कोई फायदा नहीं हो सकता है । मैं तो अपनी बात कह सकता हूं कि मैं घी खरीदना अफोर्ड नही कर सकता हूं । हमारे यहां घी नहीं खाया जाता है । दिल्ली में जो मद्रास या दक्षिण से आते हैं वे कड़वा तेल नहीं खाते हैं, उन्हें इस में बदबू आती है लेकिन आप को यह अच्छा लगता है और हम को खराब लगता है ।

श्री ए० बी० वाजपेयी : आप नारियल का तेल खाइये ।

श्री पी० रामामूर्ति : आप जानते हैं कि जो लोग मद्रास या दक्षिण से यहां दिल्ली में आते हैं वे सरसों का तेल नहीं खा सकते हैं और तिल के तेल का भाव दिल्ली में बहुत ज्यादा है ।

श्री देवकीनन्दन नारायण (महाराष्ट्र) : आप मेरे साथ आइये मैं आप को तिल का तेल सस्ता दिला दूंगा ।

श्री ए० बी० वाजपेयी : नहीं, तिल का तेल सस्ता है ।

डा० श्रीमती सीता परमानन्द : तिल के तेल के दाम हाइडरोजनेटेड तेल से ज्यादा नहीं हैं ।

श्री पी० रामामूर्ति : मैं खरीदता हूं, इसलिये मैं जानता हूं कि अच्छा तेल यहां नहीं मिलता है, और वहां से किसी तरह से लाना पड़ता है । इसलिये मैं समझता हूं कि हिन्दुस्तान के अन्दर जब हर एक जगह के लोग दूसरे दूसरे तेल को खाते हैं और अगर बग़ैर बदबू के कोई तेल मिल जाय या हाइड्रोजनेटेड आयल मिल जाय और उस को कुछ लोग अच्छा समझते हों और खाते हों तो उस को आप क्यों रोकना चाहते हैं । अगर ऊपर के तब्का के लोग घी में इस का मिलाना बन्द करना चाहें और उस के लिये कोई उपाय निकालना चाहें तो वह दूसरी बात है । इसलिये इस बिल का जो उद्देश्य है कि इस के बनाने को, इस की उपज को रोक देना चाहिये, उस का मैं विरोधी हूं ।

दूसरी जो दलीलें दी गई हैं वे तो मैं बिलकुल मानने के लिये तैयार नहीं हूं । कहते हैं कि गांवों में जितने धंधे थे वे हाइड्रोजनेटेड

आयल से बन्द हो गये, यह दलील मुझसे नही मानी जायेगी क्योकि बहुत से धन्धे हिन्दुस्तान के अन्दर से चले गये है । पहले आटा चक्की में पीसा जाता था । आजकल उस के बडे बड कारखाने हो गये हैं । पहले चावल चक्की मे कूटा जाता था । आजकल उस के भी बडे बडे कारखाने हो गये है । तो यह क्या इस हाइड्रोजनेटेड आयल से हो गया है । इसलिये रास्ता दूसरा निकालना चाहिये । अगर आप हिन्दुस्तान में घी ज्यादा बढाना चाहे, तो मै भी चाहता हू कि हम घी ज्यादा बढाये । इसी तरह हम हिन्दुस्तान मे गायो की तादाद को बढाये । आजकल जो बली दुबली गाये हैं उन की तादाद को हमे नही बढाना चाहिये । उन की तादाद कम हो जाय तो बहुत ही अच्छा है । उन के बजाय अच्छी अच्छी गायो को हिन्दुस्तान मे बढाने के लिये जो कोशिशे होनी चाहिये उनके ऊपर गवर्नमेंट की और हमारी दृष्टि होनी चाहिये ।

इसीलिये मै कहना चाहता हू कि आप के बिल का जो मतलब है, वह मतलब अच्छा नही है और उस का मै विरोध करता हू और मै समझता हू कि यह हाउस भी उस का विरोध करेगा ।

DR M M S SIDDHU Mr Vice-Chairman, Sir, on going through this Bill we find that (i) vanaspati is injurious, (ii) it is being used as an adulterant, and (iii) it adversely affects the development of dairies Before one can understand whether hydrogenated oil is injurious or not, it is worth while considering the role of fats and nutrition in human beings

Sir, fat is an essential part of the body because it forms the very matrix or the very constituent of cells itself Fat is also a vehicle through which certain essential fatty acids, without which life cannot be sustained, reach the human body Thirdly, they also give certain vitamins which are also good for the well-being of man Therefore, one has to see that the fat that one consumes is wholesome and health-giving.

As for the classification of fats, they have been classified under saturated fats and unsaturated fats Fats which are able to combine with hydrogen or iodine are called unsaturated The unsaturated fats are fish oil, groundnut oil or peanut oil, til oil, mustard oil, etc There are other fats which are saturated and which are incapable of combining with hydrogen or iodine These are called saturated fats Ghee, butter, hydrogenated vanaspati and coconut oil are the examples of saturated fats

Sir, a good deal of controversy is going on about the value of saturated fats and unsaturated fats It is also to be known that there has been established a certain correlation between the diet and the incidence of heart diseases in human beings The disease which we commonly call coronary heart disease is also known as Atherosclerosis I am sorry to use this word because in technical terms I cannot convey the meaning except by using it Atherosclerosis is a type of disease of arteries in which the wall of the artery gets thickened, gets a certain deposit of fat Its lumen gets narrowed and it may lead to thrombosis That is why cases of coronary heart disease and the blood cholesterol or the fat content of the blood were matters of investigation for a long time It is only recently, between the years 1957 and 1962 that medical opinion has crystallised and has been able to come to some conclusion Therefore, Sir, it will not be out of place if I were to refer to a certain amount of work done in medicine which proves beyond doubt that hydrogenated oil, saturated fats like ghee, butter, coconut oil, are injurious to the arteries and can lead to myocardial infraction.

SHRI AKBAR ALI KHAN: Even ghee, Doctor?

DR. M. M. S. SIDDHU: Yes, I quote from the book written by no less a scientist than Sir Howard Florey. Sir Howard Florey was a co-inventor of penicillin. So you can take it that I quote an authority on the subject. This is what he has written:—

> "There is considerable and better evidence that plasma lipids (fatty content of blood) values can be correlated with the incidence of coronary heart disease and plasma lipids have an important role in determining the severity of atherosclerotic lesions and their clinical effects. Animal experiments and clinico pathological observations in man indicate that the concentration of the B lipoproteins . . ."

That is a kind of fat.

> " . . . is the most significant factor, and some investigators maintain that the B lipoproteins can be considered as the causative agent in atherosclerosis.
>
> Extensive studies on the plasma lipid composition of different human populations have shown that differences occur which appear to depend more on the composition of the diet than on genetic or other racial factors."

This fat taken as a whole can indicate direction towards the cause of the disease of the heart.

> "It has been established in several studies that the feeding of equivalent amounts of animal fats such as butter, eggs or beef dripping maintain the plasma cholesterol at a higher level than do fish or vegetable oils This difference can be related to the total mean unsaturation of the fatty acids in the fats used and when vegetable or fish oils are saturated by hydrogenation they then have the same effect as the animal fat. Populations which have a high living standard consume a much higher proportion of saturated fatty acids in their diet than poorer communities and this is now thought to be an important factor in determining their relatively high plasma cholesterol and B lipoprotein concentrations."

These values can be lowered and maintained low by quite drastic alterations in diet, that is, the fat level in the blood can be lowered by taking a high proportion of unsaturated fat like peanut oil or groundnut oil. My friend just now said that peanut oil or groundnut oil is not easy to take. I would have informed him that during starvation, we inject peanut oil into the veins after having emulsified. People talk from ignorance and they try to project their prejudices on people and it is all the more absurd to talk in the name of science when people do not know anything about it. Some other authorities can be quoted. Some interesting investigations were done by Bruner and Lobl. Yemenite Jews, like the Bantus of South Africa, do not suffer from coronary heart disease and of the subjects examined, not one had a serum level of more than 180 per 100 ml. of beta-cholesterol, whereas another group of male patients with cardiac infraction showed approximately 90 per cent. with a beta-cholesterol level about 180 mg. per 100 ml. Other studies done by Brown and Page in 1960 stated that the blood cholesterol probably better responded to vegetable oil substitution than to simple fat reduction. Malmros and Wigand experimented on rabbits fed on synthetic diet. The addition of unsaturated fats to the diet lowered the serum cholesterol concentration, whereas saturated fatty acids added to synthetic diet resulted in higher cholesterol and grosser atheromatous lesion of aorta. Briggs, Ruberberg, O'Neal, Thomas and Hartroft in the year 1960 have indicated that incidence of myocardial infracts is said to have been higher in those gastric ulcer patients who have been kept on diet rich in milk and cream and therefore in butter fat than in those who had been restricted in their intake of dairy fat. Some experi-

ments have been done on the saturated fats in human beings. For many years it had been known that deprivation of nutritionally essential fatty acids causes characteristic deficiency disease in various animals including chickens, rats and pigs. For the first time, in 1958 a deficiency has now been recorded as seen in man by Hansen, Haggard, and others. Twenty-seven infants were given an experimental diet low in fat for a month or more and of these 15 developed changes in skin including dryness, thickening, shedding of skin as well as diarrhoea. When children were deprived of these fatty acids, this happened. But when they were administered linoliec acid, these signs quickly disappeared. In other words, when you give low saturated fats certain things appear. When you give unsaturated fat, those disappear. I may say for the information of hon. Members that til oil contains about 40 per cent. of linoliec acid.

Similarly Earnest M. Hall, Emeritus Professor, writing in 'Pathology' has said:

> "The relation of blood lipids to human atherosclerosis is now being recognised as of prime importance. After reviewing the role of blood lipid in the causation of heart disease, it states that the total animal fat content of diet is more important in the genesis of atherosclerosis than is cholesterol. Plant sterols (let us call it oil) act as inhibitors."

That is, plant vegetable oil checks the increase of blood lipid in the blood.

Bronte-Stewart and associates have pointed out that saturated fats (similar to vanaspati) increase serum cholesterol while there is no elevation of serum cholesterol level following the addition to diet of vegetable oil such as olive oil, sunflower oil and groundnut oil which all belong to unsaturated fats. It has to be noted also that there is one race whose consumption of fat in the diet forms nearly 80 per cent. That is the race of Eskimos. You may very well ask: "Do they suffer from heart diseases?" They do not. Why? In the case of Eskimos, it has been noted that in spite of high fat diet Eskimo does not develop increase of cholesterol which is called hypercholesterolemia. The Eskimos consume Marine oil (fish oil, whale oil, seal oil) which is more nearly like vegetable oils having a high proportion of unsaturated fatty acid. Ancel Keys who has investigated atherosclerosis in various parts of the world believes that diet is a major factor in this disease. In Finland, during the period of war, the incidence of heart disease was the least. It was co-related with the absence of dairy fat like butter, milk, cream, etc. Therefore, there is an overwhelming evidence today that saturated fats are harmful to the body. They are injurious but when the vanaspati industry was established in India, even then our Government was conscious of its obligations to the people. It was at that time that under the leadership of Dr. Rajendra Prasad, in 1946 when he was a Member of the Government in charge of Food and Agriculture, before Independence, he suggested the formation of a Scientific Committee to go into the question of vanaspati. Now, for a while I want to tell you what, after all, the vanaspati industry stands for. According to a monograph published, called 'The Vanaspati Industry', it says:

> "The Industry offers to traditional ghee consumers a relatively inexpensive fat of similar consistency to butter fat and to the traditional consumers of particular kind of vegetable oils, a refined oil in a different form."

The Industry has the best of both the worlds. It says to the ghee people: 'I am like ghee'. To the oil people, it says: 'I belong to you'. But it left one other business and that is the traditional trade which deals in adulteration. That also has joined

[Dr. M. M. S. Siddhu.]

hands with the industry and that is the third one, which it forgot to mention. What is vanaspati? For a while, we must understand what it is. Vanaspati is vegetable oil which has been refined; hydrogen has been added to it. Colour and smell have been removed from it and it has been vitaminised. Refining has removed certain objectionable slime, dirt, free fatty acids and colour which are present in crude oil. Hydrogenation changes the liquid fat into plastic fat and improves the keeping quality of the oil. For your information I may say that there are two types of vanaspati. One is granular and the other is plastic in form. Actually the difference is nothing. If you were to cool it suddenly, it becomes plastic like butter. If you were to cool it gradually, it becomes granular like ghee. So it produces both varieties. The difference is only whether you cool it quickly or whether you cool it gradually. Deodorisation removes the malodorous and unpalatable constituents of the crude vegetable oil.

4 P.M.

Now, as I was referring a little while ago, it was Dr. Rajendra Prasad who formed the committee to conduct research on vanaspati and its effect on human metabolism. This committee came to these two conclusions. Firstly, they found that there was no deleterious effect produced by vanaspati as compared to raw or refined oil. They said it was not inferior to refined oil or crude oil. That was the first conclusion. As regards the comparative nutritive values of pure ghee, raw groundnut oil, refined groundnut oil and vanaspati, of melting point 37 degrees Centigrade, and vanaspati of melting point 41 degrees Centigrade, the balance of experimental evidence places ghee as the best, and raw groundnut oil, refined groundnut oil and vanaspati of melting point 37 degrees Centigrade, all in one group. These are next to pure ghee, and vanaspati with melting point 41 degrees Centigrade comes third in nutritive value. Vanaspati with melting point 37 degrees Centigrade is the one that is available in the market. In other words, this vanaspati is not worse than oil. It has got the same nutritive value as oil. Then I have to ask the hon. Minister, what for do you have this industry? If the raw material is as good as and even better than the product that is produced from the factory, why not have the raw material itself? And let us remember, oil is better as far as digestibility is concerned.

DR. SHRIMATI SEETA PARMANAND: That is the main point.

DR. M. M. S. SIDDHU: The various fats follow this order of decreasing rate of hydrolysis, that is to say, their splitting property. First comes ghee. Second is refined oil. Third comes blended vanaspati. Next comes straight hardened vanaspati with high melting point hydrogenated fats. In other words, ghee comes first and then the others. Actually, experiments were carried out and a report published about the composition and nutritive value of vanaspati. Reference was made to the work done by Ray and Pal and this was quoted by Shri Chordia also. According to this report, the results obtained by Ray and Pal led to misgivings about the use of vanaspati. These results were never duplicated nor supported by experiments done in a similar manner either in India or abroad. The findings that I have just referred to are based on this committee's report which was published. You will also be surprised to know that this Government is being blamed as if it was the Government which introduced or encouraged vanaspati. It was in 1930 that the first unit of this industry was established. In the year 1945 it had developed and expanded to 50 factories with a total production of 450,000 tons. In the year 1961 we have got 55 factories—seven were closed—and the total production was 547,000 tons. So with the evidence

that was available at that time the Government took every care to safeguard the health of the nation There was no dealing "under the cloth" as Mr Chordia was just now saying The nation's health is not the concern of one individual Ministry or of the Government alone It is the concern of all the scientists and also those persons who have something to do with the medical profession as a whole The medical profession can tell us what is bad in our nutrition On their advice an Order was promulgated called 'The Vegetable Oil Control Order' It was amended in 1955 This Order said that the melting point of the vanaspati should be between 33 degrees Centigrade and 37 degrees Centigrade The vanaspati having a higher melting point was not to be produced Secondly, it laid down that Vitamin A should be added to the vanaspati So Vitamin A was incorporated to the extent of 700 international units per ounce which makes it more or less the equivalent of ghee The industry boasts that it had added vitamin to the vanaspati Actually it was Government which got it done, because it was felt that this was necessary to protect the health of the people Then you add 5 per cent til oil and you get less than 2 per cent of unsaturated fat It can easily be detected by the Boudouin Test By this test you will be able to detect whether the vanaspati is there or not You take hydrochloric acid and add it to the vanaspati you are testing Shake the two and put in a little Furfurol If there is red coloration, then it is hydrogenated oil You may not be able to see the colour in the material itself, but any housewife can carry out this simple test As long as we do not get a colouring matter which will not be harmful to man, we should not introduce any colouring matter into any food Otherwise, in the long run it will have a bad effect

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M GOVINDA REDDY): How much more time will you take, Mr Siddhu?

DR M M. S SIDDHU. Another six or seven minutes only

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M GOVINDA REDDY). All right, you may continue

SHRI AKBAR ALI KHAN: He is giving us the medical side of it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M GOVINDA REDDY). The Railway Minister is waiting to make a statement and if the hon Member wanted more time, I was thinking of asking the Minister to make his statement Now you may go on and finish your speech

DR M M S SIDDHU What I say is that our Government has been conscious of its obligations to the people and they have taken action with whatever knowledge was available here and in the world, at that time I am taking of 1947—52 The evidence then was that vanaspati was not bad It is only recently in 1958—62 that evidence has become available to show that it has bad effects and that it can lead to heart-disease Therefore it is now that we have to reconsider the matter and it should be the duty of the Government to have all the evidence sifted and to come to a conclusion whether it will be safe for the nation to have vanaspati at all or not By the way, I may add that recently, only last week, I have come across some information The American Medical Association's Food and Nutrition Council did not, in 1954 or 1955, I think, pass any judgment on the correlation of fat and heart-disease According to the "Time" magazine dated the 10th August 1962—the American Medical Association's Journal has not arrived in Delhi yet—the position is·

> "The American Medical Association experts had waited for years to commit themselves As a result, the Council was able to make a point that has only recently become clear to searchers merely cutting down the amount of fat in the diet is not the way to lower the blood cholesterol This is because less

[Dr M M S Siddhu]

overall fat usually means an increase in consumption of carbohydrates (sugars and starches) which the body somehow converts into fats known as triglycerides The right way, said the Council, is to replace much of the saturated fat (in eggs, meat and dairy products) with the polyunsaturated forms found in fish and the dark meat of poultry, and especially in vegetable oils"

This is the finding of the Council of Food and Nutrition, a body whose decisions are to be respected This is the situation in which we are today World opinion is not in favour of switching on to saturated fats like vanaspati or to ghee or butter, but ghee and butter are essential for the growth of the people It is not that we should give it up The best way would be to take both of them and this is what, as far as I remember, Shri Karmarkar said in reply to a question in the Lok Sabha on this subject He said at that time that oil should be preferred Then the question arises, is vanaspati inferior to ghee both in digestibility and nutritive value? Nobody doubts it Vanaspati, at the most, is equal to groundnut oil but it is a saturated fat and carries with it the harmful effects without the benefit of the groundnut oil Shall we hydrogenate groundnut oil or shall we not? You can consume groundnut oil as such and I have told you, Sir, that in treatment we pour groundnut oil as pure fat in the gullet of man and there is no bad effect We did it Then, it is only by means of advertisement and propaganda that an impression has been created in the public mind that vanaspati is harmless, it is health giving and nourishing and essential for body They say that certain things have been added, that it is vitaminised Yes, it is so, but when it has been proved that oils are better than vanaspati, why waste public money, why spoil the health of the people by using vanaspati? Even if it is doubtful whether heart diseases can be correlated, we should not use it There are other things like smoking which is said to produce cancer The British Parliament has said advertisements should be reduced They said that smoking advertisements should not appear in Government papers The same thing was done in regard to tobacco This is how other countries are doing it When the evidence is before us that it is harmful, shall we then continue to use it or shall we not? I give qualified support to the Bill because to my mind it will be wrong on our part to send or export hydrogenated oils I do not stand here to say so because it is adulterant but my contention is that on the scientific grounds vanaspati stands condemned What then is to be done? First of all, we should discourage advertisements and propaganda which is carried on to create a demand for vanaspati This is the first thing to be done by Government because the vested interests have created a market As far as I remember, there was a suggestion to ban it but then everyone coming to the shop was asked to sign a statement saying that they wanted vanaspati and so, the number of persons who supported vanaspati was much more than the persons who were against it This is the "strength" to which Mr Vajpayee referred First of all, statutorily, we should try to do it and, secondly, we should reduce hydrogenation to the minimum possible level We should ask them to give up refined oil which is bland If other countries can carry on with salad oil, I do not see why we cannot The whole of the Mediterranean countries can use olive oil, I do not see why we should not go in for oils The hon Member quoted certain statistics regarding Denmark and said that the quantum of dairy fat was not the same but he forgot that 22 oz of milk also contained fat Then if both of them *i e* milk and dairy fats are added, it will be more That is why in other countries which consume more fat, the tendency is to reduce the fat The refined oil

should be fortified with vitamins A and D so that they do not have the bad effect Thirdly, I would suggest that we should encourage the intake of whole milk and oil below the age of twenty-five and skimmed milk or "separeta" as we call it, and oil above twenty-five We will have all the good effects without the bad effects of the saturated fat For this, health education will be needed The attitude of people in regard to oil is indifference and the Khadi and Gram Udyog Commission should popularise oil because prejudices will die hard My friend said that he does not like the smell of mustard oil Let me tell him that when I took the first cup of coffee, it tasted bitter

Another thing I find is that in the Third Plan, provision is made for the import of soya bean oil and a certain amount of soya bean oil has already been imported to find out whether with our technical know-how it can be converted into vegetable oil My submission is, for goodness' sake we have done enough, let us not import further soya bean oil to convert it into inferior fat

I have to ask the hon Minister one or two questions Why should we not eat oils as such? Why should we allow hydrogenation? What is wrong with oils? Why should you not propagate it when all the researches are in favour of it? If the answer to these questions is in the affirmative, then the hydrogenation industry, the vanaspati industry, should not form part of our industrial programme

A word about adulteration of oils We, in Northern India, are great consumers of mustard oil but you will be surprised to know that scientists cannot detect twenty per cent adulteration in mustard oil If I am to send it to any laboratory, a sample containing fifteen per cent adulteration, they will pass it as good There comes the trouble May I quote from Ganguli, "Health and Nutrition in India"?

> "It is a common practice to adulterate the mustard oil with oils from Niger, Sesame, linseed and other oilbearing seeds, or even with cheap mineral oil The difficulty in controlling the purity of mustard oil lies in the fact that it may be adulterated with twenty per cent or even more of these oils from adulterants and yet the saponification and iodine values "

These are the values by which they test oils

> " will remain within the limits stipulated by Pure Food Acts in India"

Now in order to fight adulteration I think our scientists have to evolve a better machinery and better methods of testing so that adulteration below 20 per cent in oils could be detected As far as I remember, even if the ghee is adulterated to the extent of 10 to 12 per cent, no test will be able to detect it These are the faults with our detection, with our specifications The food laws, as well as the Food Adulteration Act, need to be revised and I am hoping for the day when the Health Minister and the Food Minister with all the knowledge that is available will devise ways and means with which adulteration could be detected And secondly it should be the job of the law-makers as well as those who implement the laws to see that means are adopted by which adulteration in food at least is done away with

SHRI AKBAR ALI KHAN: And drugs also, Doctor

DR. M M S SIDDHU I will not refer to it at present because it will become wider It is the Government which is responsible, I charge it They are the biggest consumers of drugs and they are the persons who demand the cheapest medicines When you sacrifice quantity for quality, adulteration, sub-standards, low standards are all bound to be there If possibly at some other time a debate is held

[Dr. M. M. S. Siddhu.]

or the House is given an opportunity, I will be able to express my views as to what and who is responsible for this so far as drugs are concerned.

With these few words I give qualified support to Mr. Vajpayee's motion, qualified in the sense that I do not believe all that was said in the reasoning of it, that is, it is killing the dairy industry, it is adversely affecting the village industry and so on, but purely from the point of view of the health of the nation.

STATEMENT *RE* THE COMMISSION OF ENQUIRY INTO THE DUMRAON RAILWAY ACCIDENT

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): The Deputy Minister of Railways will make a statement.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI SHAH NAWAZ KHAN): Sir, the Commission of Enquiry constituted by Government on 27th July 1962 to enquire into the serious accident to 6 Down Amritsar-Howrah Mail at Dumraon on the night of 21st July 1962, held preliminary discussions at Delhi on 31st July and 1st August 1962. They inspected the site of accident on 13th August 1962 and commenced their sittings at Patna from 25th August 1962. Necessary press notices had been issued earlier requesting members of the public who are in a position to assist the Commission to send their memoranda so that the Commission may decide as to who should be called for evidence.

On 25th August 1962 while arguing the case on behalf of the Railways, Shri Sanyal, Additional Solicitor General of India, referred to certain documents and informed the Commission that the Police were in possession thereof. Shri R. K Singh, the Counsel on behalf of Bihar State on being questioned stated that these documents were in the custody of a Sub-Divisional Officer, Buxar. The Commission thereupon felt that the subject-matter of the enquiry may be *sub judice* and asked the Counsel to look into the matter and to find out the exact position. Subject to this, the proceedings were continued on 25th August 1962.

No sittings took place on Sunday, the 26th August, 1962.

On Monday, the 27th August, 1962, Shri Sanyal stated that if cognizance had been taken of the case by a criminal court, the proceedings of the Commission would have amounted to parallel investigation and that such an investigation might amount to contempt of the criminal court. The Commission asked Shri R. K. Singh, Counsel for Bihar State, if the case relating to the above railway accident had gone to the criminal court and if the criminal court had taken cognizance thereof. Shri Singh stated that no cognizance had yet been taken and that such cognizance would be taken on 30th August, 1962. He also expressed the view that a long time would elapse before the criminal court deals with the matter and that the enquiry by the Commission can be finished long before that Shri A. K. Dutt, Counsel on behalf of one of the cabinmen, stated that if cognizance had been taken by the criminal court, it would not be possible for the Commission to continue the proceedings. As the Commission felt that Shri R. K. Singh may not be fully conversant with the facts of the case, he was asked to look into the matter carefully and give in writing the correct facts relating to the proceedings that had been taken on the first information report which had been filed soon after the accident. The Commission further requested Shri Singh to see that the criminal court does not take cognizance of the case meanwhile Shri Sanyal expressed the view that it would not be proper to continue the proceedings in the circumstances of the case.